शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

माह : अगस्त, वर्ष : 2023

अंक : 35

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान।

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष : 2023
अंक : 35
माह : अगस्त

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार
प्रबन्ध सम्पादक
श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन
प्रांजल सक्सेना
सम्पादक
ज्योति कुमारी
आनन्द मिश्रा
सह सम्पादक
डॉ0 अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल
छायांकन
वीरेन्द्र परनामी
ग्राफिक एवं डिजाइन
जितेन्द्र कुमार
विशेष सहयोगी
नवीन पोरवाल
नैमिष शर्मा

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन के लिए लगातार कई वर्षों से कार्य कर रहा है। एक समय वह भी था जब बेसिक शिक्षा व यहाँ कार्यरत शिक्षकों को लोग नकारात्मक रूप में देखते थे जैसे शिक्षक कोई कार्य ही न करते हों। मिशन शिक्षण संवाद द्वारा शिक्षकों को एक नयी पहचान मिली। इससे जुड़े शिक्षकों ने बेसिक शिक्षा की अच्छाइयों व नवाचारी शिक्षकों द्वारा किए जा रहे अच्छे कार्यों को लोगों के बीच में रखना प्रारम्भ किया। धीरे-धीरे मिशन के शिक्षकों के अभिनव प्रयास और नवाचार आम जनमानस तक पहुँचने लगे और शासन स्तर पर भी इसके कार्यों को सराहना मिलने लगी।

वर्तमान समय में शैक्षिक गतिविधियों को साझा करने हेतु इस टीम द्वारा तरह-तरह के प्लेटफार्मों का प्रयोग जा रहा है जिनमें दैनिक श्यामपट्ट सन्देश, काव्यांजलि, स्वरांजलि, दैनिक क्विज, नैतिक प्रभात, टी एल एम, दैनिक योग, गीतांजलि, बाल साहित्य सृजन आदि प्रमुख हैं। मिशन शिक्षण संवाद द्वारा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु पढ़ाई से प्रतियोगिता तक अभियान के अन्तर्गत प्रेषित सामग्री बच्चों के लिए काफी लाभकारी सिद्ध हो रही है। इसी का परिणाम है कि इस वर्ष राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा में पिछले वर्षों की तुलना में कई गुना अधिक बच्चों ने प्रतिभाग किया और सफलता हासिल की तथा अभी आये श्रेष्ठा परीक्षा परिणाम में भी उम्दा प्रदर्शन किया है।

मिशन शिक्षण संवाद द्वारा प्रत्येक माह ऑनलाइन प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका "शिक्षण संवाद" के सभी स्तम्भ काफी प्रभावशाली होते हैं। मैं शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य करने वाली इस टीम के सदस्यों की सराहना करता हूँ तथा मिशन शिक्षण संवाद की पूरी टीम को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

पुष्पेन्द्र कुमार

खण्ड शिक्षा अधिकारी

विकास क्षेत्र- बागपत, जनपद- बागपत

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ बहुत-बहुत बधाई। जैसा कि हम सभी जानते एवं अनुभव करते हैं कि जीवन में स्वतन्त्रता शब्द बहुत ही सुखद और आनन्द का कारण होता है। इसीलिए सृष्टि का प्रत्येक प्राणी सतत ऐसे प्रयास और संघर्ष करता रहता है कि वह स्वतन्त्रता के लक्ष्य को प्राप्त कर सके । स्वतन्त्रता के लक्ष्य तक पहुँचने में कई बार अनेक जीवन की आहुतियाँ देनी पड़ती हैं। हम सब भी आज जिस स्वतन्त्रता में जीवन की खुली साँसें ले पा रहे हैं वह भी लाखों महान क्रान्तिकारियों एवं स्वतन्त्रता सेनानियों के त्याग और बलिदान का प्रतिफल है। इसीलिए इस आजादी को बनाये रखना तथा सम्मान और स्वाभिमान के साथ राष्ट्र को गौरवमयी बनाने में हम सभी की भी जिम्मेदारी कई गुना बढ़ जाती है जिससे न सिर्फ हम बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी यह स्वतन्त्रता हस्तांतरित की जा सके। इसी गौरवमयी स्वतन्त्र राष्ट्र की संकल्पना को मजबूत बनाये रखने के लिए निशुल्क एवं निस्वार्थ स्वैच्छिक स्वयंसेवी सेवा के प्रयास मिशन शिक्षण संवाद परिवार लगातार विगत कई वर्षों से अपनी क्षमता के अनुसार विविध प्रकार से करता आ रहा है। इन्हीं विविध प्रयासों में से एक "शिक्षण संवाद" मासिक पत्रिका के रूप में आपसी सीखने-सिखाने के साथ, समझ और अनुभव की दिशा में सेवा करने का प्रयास है।

आशा है आप सभी सहयोगी भी शिक्षण संवाद के विविध स्तम्भों की रोचक एवं उपयोगी जानकारियों से लाभान्वित होंगे तथा अपने फीडबैक और मार्गदर्शन से हम सभी को भी लाभान्वित करेंगे।

धन्यवाद।

जय हिन्द!

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
मिशन गीत	1
अनमोल रत्न	2
विचारशक्ति	3
बात महिला शिक्षकों की	4
बाल कविता	6
टी एल एम संसार	7
प्रेरक प्रसंग	8
प्रेरक प्रसंग-2	10
बाल साहित्य	12
बाल कहानी	13
खेल विशेष	14
योग विशेष	16
सदविचार	18
गतिविधि	20

मिशन गीत

मिशन शिक्षण संवाद

अरविन्द कुमार सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय धवकलगंज,
विकास खण्ड- बड़ागाँव,
जनपद- वाराणसी।

कभी न टूटे बना रहे ये,
दृढ़ संकल्प हमारा।
मिशन शिक्षण संवाद का प्रकाश,
फैले जग में सारा। हो फैले जग में सारा।
कभी न टूटे.....

मिशन के संग-संग आओ,
हम सब हाथ बढ़ाएँ।
नन्हें-मुन्नों के भविष्य को,
हम सब सँवारते जाएँ।
दुखों में भी खुश रहना सीखें,
करें जगत को न्यारा।
मिशन शिक्षण.....

नवाचार का कर प्रयोग,
छात्रों को सब दे जाएँ।
राष्ट्र वीर और राष्ट्र के प्रहरी,
बनकर वो दिखलाएँ।
नहीं अछूता रहे कोई भी,
सब चमकें बन तारा।
मिशन शिक्षण.....

गणित, संस्कृत, अंग्रेजी,
विज्ञान का ज्ञान दे जाएँ।
नृत्य, कला, संगीत, संभाषण,
में उन्नत हो पाएँ।
पढ़-लिख छात्र हों ओजस्वी,
गूँजे जयहिंद का नारा।
मिशन शिक्षण.....

अनमोल रत्न

५१८~

हृदय राम अंथवाल (प्रभारी प्र०अ०)

राजकीय प्राथमिक विद्यालय लैणी हिन्दाव

विकास खण्ड- भिलंगना

जनपद- टिहरी गढवाल (उत्तराखण्ड)

https://shikshansamvad.blogspot.com/2021/07/blog-post_44.html

विचारशक्ति

आधुनिक शिक्षा के बदलते प्रतिमान

शिक्षण संवाद

"शिक्षा है अनमोल रतन, पाने का सभी करें जतन।
पढ़-लिखकर बनो महान, प्यारे बच्चों ये लो ठान।।"

शिक्षा व्यवस्था समाज की प्रगति का प्रतिबिम्ब होती है। अत: यह नितान्त आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा व्यवस्था इतनी पारदर्शी, सर्वसुलभ व समावेशी हो, जिससे आसानी से किसी भी समाज की प्रगति का निर्धारण किया जा सके। जबसे सृष्टि का सृजन हुआ है, तबसे लेकर आज तक शिक्षा व्यवस्था समय व परिस्थिति के अनुसार विभिन्न परिपाटियों से गुजरती रही है, जो कि प्रगतिशीलता का द्योतक है। जहाँ एक ओर प्राचीन शिक्षा व्यवस्था चरित्र निर्माण व संस्कारों को परिष्कृत व परिमार्जित करती है, वहीं वर्तमान शिक्षा प्रणाली बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ आधुनिक समाज के निर्माण हेतु आवश्यक नवाचारों को भी निरन्तर गढ़ने का प्रयास कर रही है। उदाहरण के तौर पर परिषदीय विद्यालय जोकि एक समय कान्वेन्ट स्कूलों से काफी पिछड़े माने जाते थे, वो आज हमारे शिक्षकों द्वारा निरन्तर पूर्ण मनोयोग से शिक्षण व अधिगम की आधुनिकतम तकनीकों को अपनाकर उनसे आगे निकलने हेतु लालायित नजर आ रहे हैं।

शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में बच्चे पूरी लगन व तल्लीनता के साथ गतिविधि व आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से मनोरंजक तरीके से पढ़ व सीख रहे हैं। इतना ही नहीं वरन् अपनी प्रतिभा का लोहा भी मनवा रहे हैं। आज की शिक्षा पद्धति के माध्यम से शिक्षक भी बुनियादी अधिगम व ध्यानाकर्षण जैसी शिक्षण तकनीकों को अपनाकर अपनी मेधा में अभिवृद्धि करके समाज में अपने दायित्व व उसके निर्वहन की मिसाल प्रस्तुत कर रहे हैं व नौनिहालों का स्वर्णिम भविष्य गढ़ रहे हैं।

आज जिस तरह से शिक्षक पुस्तकीय ज्ञान की सीमा से निकलकर मिशन प्रेरणा व शिक्षण संवाद जैसे मंचों से अपने को सम्बद्ध करके बाल साहित्य सृजन यथा बाल सुलभ रचनाओं, कविता-कहानियों व विचार शक्ति लेखों आदि के माध्यम से जन-जन तक ज्ञान व विज्ञान की अलख जगा रहा है उससे लगता है विश्व में भारतवर्ष की मेधा का परचम एक बार पुन: लहरायेगा व भारतवर्ष शिक्षा के क्षेत्र में सिरमौर बनकर विश्व के समक्ष उभरेगा।

प्रेम प्रकाश वर्मा,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय पचुरखी,
विकास क्षेत्र- बिसवाँ, जनपद- सीतापुर।

महिला सशक्तिकरण

बात महिला शिक्षकों की

शिक्षण संवाद

सर्वांगीण विकास के जन्म से लेकर अन्तिम समय तक, जीवन के प्रारम्भ से सही पथ के अनुसरण में महिला शिक्षकों का अहम योगदान रहा है। प्रारम्भिक शिक्षा से उच्च शिक्षा तक के सफर में छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व निर्माण में महिला शिक्षकों की महती भूमिका रही है। जीवन के विकास में शिक्षा का प्रकाश प्रथम गुरु के रूप माँ अपने बच्चे के लिए शिक्षारूपी ज्योति जलाकर जीवन की आधारशिला रखती है। इस तरह से प्रत्येक महिला एक शिक्षिका के रूप में ही होती है। बच्चों की शिक्षा की शुरुआत माँ के गर्भ से ही हो जाती है।

राष्ट्रनिर्माण में महिला शिक्षकों की भूमिका बहुत अधिक होती है किन्तु यह तब और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जब व्यक्ति का शिक्षणकाल जन्म से ही एक मजबूत आधारशिला पर रखा गया हो और और यदि यह एक महिला शिक्षक के द्वारा किया गया हो तो यह अधिक बेहतर रहेगा। जीवन की नींव जितनी अधिक सुदृढ़ होगी भविष्य उतना ही अधिक बेहतर होगा। इस सम्पूर्ण संसार में स्वर्ग का निर्माण प्रारम्भ से सम्पूर्ण जीवन के स्वर्णिम अन्त तक का सफर तय करने में महिला शिक्षकों की भूमिका और उनके अप्रतिम सहयोग को नकारा नहीं जा सकता है। जब कभी भी महिला शिक्षकों के विषय में बात होगी तब वह एक जननी के रूप में प्रथम गुरु का दर्शन कराती है। घर में एक माँ के रूप में और बाहर विद्यालय में वह शिक्षिका के रूप में एक अच्छे समाज के निर्माण में इसकी अहम भूमिका होती है।

यदि एक अच्छा शिक्षक प्रारम्भ से ही किसी बालक के जीवन का पथप्रदर्शक बन जाये तो निश्चित ही उसके जीवन की समस्त बाधाएँ स्वयं ही समाप्त हो जाएँगी और इसके लिए सबसे उपयोगी व महत्वपूर्ण भूमिका एक महिला की होती हैं क्योंकि महिला ही है जो बच्चे के जन्म के पहले और बाद दोनों में सबसे अधिक जुड़ी होती है। प्रारम्भिक शिक्षा में महिला शिक्षिका की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है क्योंकि जितने अच्छे तरीके से प्रकाश रूपी पुँज की अलख एक महिला शिक्षक जला सकती है उतने अच्छे तरीके से और कोई नहीं। बच्चे सामान्यतः पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं के साथ सहजता का अनुभव करते हैं और यही जुड़ाव बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा में अहम भूमिका का निर्वहन करता है।

आज जब बात महिला शिक्षिकाओं की और देश के सर्वांगीण विकास में इनके योगदान की होती है तो देखने में यह आता है कि महिला शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त प्रभावी व महत्वपूर्ण होती है। इसके कारण स्वरूप में हम देख सकते हैं-

छात्र छात्राओं के जीवन पर अलौकिक विकास, भारतीय समाज के आर्थिक एवं सर्वांगीण विकास में महिला शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान, शैक्षिक प्रणाली को अधिक मजबूती प्रदान करना, विभिन्न राष्ट्रीय योजनाओं का विकास जमीनी स्तर पर होना, सर्व शिक्षा अभियान, बालिका शिक्षा, समृद्ध शिक्षा, इन्दिरा महिला योजना आदि योजनाओं की सफलता एक महिला पर ही निर्भर है। देश, समाज व परिवार के लिए खुशहाली का परिचायक, सुखद पारिवारिक माहौल के निर्माण में, राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका के रूप में एक महिला शिक्षिका की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।

इसलिए जीवन रूपी शिलालेख के निर्माण में महिला शिक्षकों की भूमिका और इनके महत्व को नकारा नहीं जा सकता है और जब कभी भी एक महिला शिक्षक की बात होगी तब प्रारम्भ से लेकर अन्त तक छात्र-छात्राओं के जीवन को सँवारते हुए उसे सकारात्मक दिशा प्रदान करना एक महिला शिक्षक द्वारा बखूबी किया जाता है और इनके द्वारा किये जाने वाले इस अमूल्य कार्य का मूल्यांकन किसी के वश की बात नहीं।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि एक महिला शिक्षक के द्वारा व्यक्ति के सार्वभौमिक जीवन के निर्माण व विकास में दिया गया योगदान अमूल्य होता है जिसका कोई मोल नहीं।

शोभा यादव,

सहायक अध्यापक,

प्राथमिक विद्यालय रियारी,

विकास खण्ड- देवमई, जनपद- फतेहपुर।

बाल कविता

शिक्षण संवाद

रेगिस्तान का जहाज

उसकी पीठ में कूबड़ होता,
जिसमें रहती वसा इकट्ठा।
ऊँट के पैर हैं गद्दीदार,
करें सहन गर्मी की मार।।

बहुत दिनों तक बिन पानी के,
वह जीवित रह लेता है।
सर्दी, गर्मी के अनुसार,
शरीर अनुकूलित कर लेता है।।

ढोता सवारी और सामान,
कृषि कार्यों में आता काम।
काँटेदार वनस्पति खाता,
रेगिस्तानी जहाज कहलाता।।

राज कुमार शर्मा,
प्रधानाध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय चित्रवार,
विकास क्षेत्र- मऊ,
जनपद- चित्रकूट।

टी० एल० एम० संसार

शब्द-रचना फ्लैश काड्र्स

शिक्षण संवाद

TLM का नाम- शब्द रचना फ्लैश कार्ड्स

प्रयुक्त सामग्री- काला चार्ट पेपर, स्केच पेन, रंगीन टेप, फ्लैश कार्ड्स, गत्ते के टुकड़े आदि।

निर्माण विधि- सबसे पहले एक काला चार्ट पेपर लेंगे। फ्लैश कार्ड्स बनाने के लिए गत्ते के टुकड़े पर रंगीन कागज चिपका देंगे। इसके बाद उन पर वर्णमाला के अक्षर लिखे जाएँगे। कुछ चित्र लिए जाएँगे और उन्हें चार्ट पेपर पर चिपका देंगे फ्लैश कार्ड्स बच्चों को देंगे और चित्र से संबंधित शब्द बनाने के लिए बच्चों को कहा जाएगा। लिखने के लिए सफेद मार्कर का प्रयोग किया जाएगा।

उपयोगिता-

1. बच्चे फ्लैश कार्डस् के माध्यम से शब्द रचना करना सीखेंगे।
2. इससे बच्चे वर्णमाला को सही तरीके से पहचान भी सकेंगे।
3. बच्चे खेल-खेल में चित्रों और शब्दों का सही मिलान करना सीख जाएँगे।

मीना भाटिया,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय डाढ़ा,
विकास खण्ड- दनकौर,
जनपद- गौतम बुद्ध नगर।

प्रेरक प्रसंग

बाल गंगाधर तिलक

शिक्षण संवाद

बाल गंगाधर तिलक का मूल नाम केशव गंगाधर तिलक था। बाल गंगाधर तिलक से लोकमान्य तिलक कैसे बने इसका भी एक कारण है जनता के बीच प्रिय होना। भारतीय जनता उनको अपना प्रिय नेता मानती थी इसलिए लोकमान्य उपनाम दिया। भारत भूमि को गौरवान्वित होने का अवसर 23 जुलाई 1856 को आया। इनका जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के चिखली गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर तिलक और माता का नाम पार्वती बाई गंगाधर था। इन्होंने आधुनिक कॉलेज में शिक्षा पायी थी। तिलक अंग्रेजी सभ्यता को बिगड़े रूप में अपनाने के प्रबल विरोधी थे।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख नायक के रूप में सदैव जीवन पर्यंत संघर्ष एवं नेतृत्व करते रहे। बाल गंगाधर तिलक एक भारतीय राष्ट्रवादी शिक्षक एवं समाज सुधारक के रूप में स्वतन्त्रता दिलाने में प्रयासरत रहे। कहा जाता है कि वह भारतीय संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता रहे जिनको जनता ने लोकमान्य उपनाम दिया। लोकमान्य तिलक एक महान समाज सुधारक भी थे और एक महान वकील भी। तिलक ने देश को आजादी दिलाने के लिए मराठी भाषा में एक नारा दिया -"स्वराज माझा जन्मसिद्ध अधिकार हक्क आहे आणि मी तो मिलवणारच"।

अर्थात स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा। एक समय की बात है तिलक की माँ ने बड़े प्यार से कहा - "बेटा, ले ये दो टुकड़े मिठाई के हैं। इनमें से यह बड़ा टुकड़ा तू स्वयं खा लेना और छोटा टुकड़ा अपने दोस्त को दे देना। तिलक वह दोनों टुकड़े लेकर बाहर आ गये। उन्होंने अपने दोस्त को मिठाई का बड़ा टुकड़ा देकर छोटा स्वयं खाने लगे। माँ यह सब देख रही थी। उन्होंने अपने पुत्र को अन्दर बुलाया और बोलीं- "मैंने तुमसे बड़ा टुकड़ा खुद खाने और छोटा उस बच्चे को देने के लिए कहा था, किन्तु तूने छोटा स्वयं खाकर बड़ा उसे क्यों दिया?" वह बोले- "माँ ! दूसरों को अधिक देने और अपने लिए कम-से-कम लेने में मुझे अधिक आनन्द आता है।" तो यह थी बाल गंगाधर से जुडी हुई एक घटना। इस एक छोटे से वाक्य में उन्होंने बहुत कुछ कह दिया। जिसे सुनकर उनकी माँ भी हैरान रह गयी। सत्य यही है कि यदि मनुष्य अपने लिए कम चाहे और दूसरों को अधिक देने का प्रयत्न करेगा तो समस्त संघर्षों की समाप्ति हो जाएगी और स्नेह, सौजन्य की परिस्थितियाँ अपने आप ही उत्पन्न हो सकती हैं।

बाल गंगाधर तिलक से जुडी हुई एक और भी घटना है जो कि तिलक के स्कूली जीवन की है। एक समय था जब तिलक अपने स्कूल में थे, उनकी कक्षा के सारे बच्चे कक्षा में बैठकर मूँगफली खा रहे थे तो उनके छिलके कक्षा में ही फेंक रहे थे जिससे पूरी कक्षा में गन्दगी फैल गयी। कुछ समय बाद उनके शिक्षक कक्षा में आये, उन्होंने देखा चारो तरफ गन्दगी फैली हुई है। वह यह देखकर बहुत नाराज हो गये। उन्होंने सभी को चिल्लाया और अपनी छड़ी निकाल कर सभी बच्चों को लाइन से हथेली पर 2-2 बार मारने लगे। जब तिलक की बारी आयी तो तिलक ने छड़ी खाने के लिए अपना हाथ आगे नहीं किया। उनके शिक्षक ने कहा- "अपना हाथ आगे बढ़ाओ", तब उन्होंने कहा- "मैंने कक्षा को गन्दा नहीं किया है इसलिए मैं मार नहीं खाऊँगा।" यह बात सुनते ही शिक्षक का गुस्सा और बढ़ गया। फिर शिक्षक ने उनकी शिकायत जाकर प्रधानाचार्य से की। इसके बाद क्या होना था तिलक के घर पर उनकी शिकायत की गयी और उनके पिताजी को स्कूल बुलाया गया। जब उनके पिता स्कूल आये तो उन्होंने कहा- "मेरे बेटे के पास पैसे ही नहीं थे, वह मूँगफली किसी भी हालत में नहीं खरीद सकता।" तो यह घटना थी उनके साहस की। उस दिन अगर वह शिक्षक के डर से मार खा लेते तो उनके अन्दर का साहस बचपन में ही खत्म हो जाता। उसके बाद बाल गंगाधर तिलक अपने जीवन में कभी भी अन्याय के सामने नहीं झुके ।

इस बहुत छोटी सी घटना से हम सभी को एक सबक मिलता है। यदि गलती न हो तो उसे कभी स्वीकार न करें। जब हम उसे स्वीकार कर लेते हैं तो यह माना जाता है कि उस गलती में हम भी शामिल थे। इसलिए कभी भी अन्याय के सामने न झुकें।

प्रतिमा उमराव,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय अमौली (1-8),
विकास खण्ड-अमौली,
जनपद-फतेहपुर।

प्रेरक प्रसंग-2

मेजर ध्यानचन्द

शिक्षण संवाद

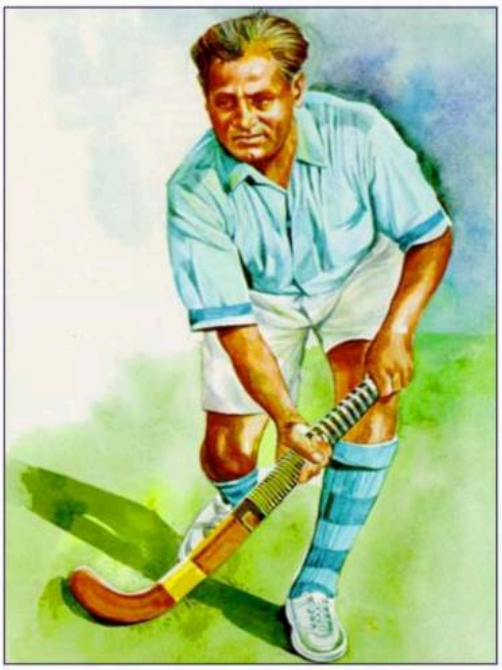

सम्पूर्ण विश्व यह जानता है कि हॉकी का पर्याय 'ध्यानचन्द' कहा जाये तो गलत नहीं होगा। हॉकी का नाम आते ही ध्यानचन्द जी की ही छवि सहज ही उभर आती है। एक खिलाड़ी के रूप में गोल करने की उनकी शैली सभी खिलाड़ियों से बिल्कुल अलग थी। इसीलिए उन्हें "हॉकी के जादूगर" के नाम से भी जाना जाता है। मेजर ध्यानचन्द सही मायने में हॉकी के पहले और आखिरी लीजैंड थे। हॉकी के खेल में ध्यानचन्द जी ने लोकप्रियता का जो कीर्तिमान स्थापित किया है, उससे पूरा विश्व परिचित है। मेजर ध्यानचन्द जी के प्रेरणाप्रद जीवन से जुड़े हुए बहुत से प्रेरक प्रसंग हैं। जिनसे हमें बहुत सीखने को मिलता है।

बात उस समय की है जब ध्यानचन्द जी की उम्र 14 वर्ष होगी। वे अपने दोस्तों के साथ पेड़ की एक टहनी तोड़कर लाते थे और कपड़ों की बॉल बनाकर हॉकी खेलते थे। एक बार वह अपने पिता के साथ मिलेट्री कैम्पस में एक हॉकी मैच देख रहे थे। उन्होंने देखा कि एक टीम दूसरी टीम पर लगातार गोल कर रही है। उन्होंने पिता से कहा-'अगर मैं इस टीम में होता तो बहुत गोल करता।' कहते हैं कि ध्यानचन्द जी की इस बात को पास में खड़े एक आर्मी ऑफीसर ने सुना, तो उन्होंने हँसते हुए ध्यानचन्द को कमजोर टीम के साथ खेलने की अनुमति दे दी। ध्यानचन्द ने अपनी अद्भुत खेल क्षमता का परिचय देते हुए एक के बाद एक चार गोल दागकर सारी स्थिति को पलट दिया। ध्यानचन्द जी की हॉकी की इस जादुई प्रतिभा से प्रभावित होकर आर्मी ऑफीसर ने उन्हें दो साल बाद इण्डियन आर्मी में शामिल कर लिया क्योंकि उनके अन्दर हॉकी खेलने का जुनून था।

क्रिकेट के अजूबा कहे जाने वाले सर डॉन ब्रेडमैन का प्रशंसक दुनिया का कौन क्रिकेटर नहीं है। लेकिन ब्रेडमैन स्वयं इस हॉकी के जादूगर से प्रभावित थे। सन् 1935 में ध्यानचन्द जी की टीम ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड के दौरे पर गयी थी। जहाँ उन्होंने 48 मैचों में 201 गोल किये। ऑस्ट्रेलिया में एक मैच देखने ब्रेडमैन भी आये थे। ध्यानचन्द को लगातार गोल करते देख वे दंग रह गये। मैच खत्म होने पर वे ध्यानचन्द जी से मिले और कहा- "आप तो ऐसे गोल कर रहे थे मानों रन बना रहे हैं।" यही नहीं 1936 में बर्लिन ओलम्पिक के दौरान जर्मनी के खिलाफ ध्यानचन्द द्वारा लगातार गोल करते देख जर्मन तानाशाह हिटलर भी उनसे प्रभावित हो गया था।

कहा जाता है कि उसने ध्यानचन्द को जर्मनी की तरफ से खेलने का प्रस्ताव रखते हुए मुँह माँगी कीमत देने को कहा। मगर ध्यानचन्द ने बड़ी शिष्टता से मना करते हुए कहा था कि मुझे भारतीय ही बने रहने दीजिए। ध्यानचन्द जी की देशभक्ति को हम सब नमन करते हैं।

भारत को ओलम्पिक खेलों में स्वर्ण पदक दिलवाने वाले महान हॉकी खिलाड़ी ध्यानचन्द जी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए उनके जन्मदिन 29 अगस्त को हर वर्ष भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति के द्वारा विभिन्न पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। बहुत से भारतीय स्कूल और शिक्षण संस्थान राष्ट्रीय खेल दिवस के दिन वार्षिक खेल समारोह आयोजित करते हैं और ध्यानचन्द जी के जीवन को आदर्श मानते हुए उन्हें याद करते हैं।

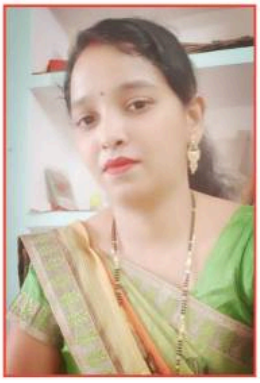

अनुप्रिया यादव,
सहायक अध्यापिका,
कन्या विद्यालय काजीखेड़ा,
विकास खण्ड- खजुहा,
जनपद- फतेहपुर

गाँव वाला अंग्रेजी स्कूल

शिक्षण संवाद

लेखक प्रांजल सक्सेना जी द्वारा सृजित "गाँव वाला अंग्रेजी स्कूल" एक ऐसी पुस्तक है जिसमें बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों हर आयु वर्ग के लिए पढ़ने और सीखने के लिए बहुत कुछ है। इतनी सरल और सहज भाषा में लिखी गयी है की कक्षा 3 में पढ़ने वाला बच्चा भी आसानी से इसके वाक्यों को समझ सकता है। पाठक इसे पढ़ते पढ़ते एक बार को तो अपने बचपन में पहुँच जाता है। पढ़ने वाला यदि मेरे जैसा सरकारी परिषदीय स्कूल में पढ़ा हुआ हो तो वह अपने आपको इससे जोड़ने से रोक नहीं पाता है।

गाँवों में धड़ल्ले से आज भी चल रहे अमान्य विद्यालयों के कारण किस तरह सरकारी विद्यालयों में नामांकन कम होते हैं इसका चित्रण बहुत ही सटीक तरीके से किया गया है। बालजीवन की कठिनाइयों, बच्चों के कल्पनालोक की सैर और कार्टून अथवा कॉमिक्स के परिचित सुपर हीरोज नागराज, ध्रुव, स्पाइडरमैन, सुपरमैन आदि की तरह स्वयं भी एक सुपरहीरो बनने की चाह हर बच्चे में होती है इसका चित्रण बहुत ही रोचक हो चला है।

यह पुस्तक गाँव और शहर के बच्चों के बीच के भेदभाव को पाटने वाले एक पुल का काम करती है। ग्रामीण बच्चों के अभावग्रस्त और कठिन जीवन को बहुत ही जीवन्त शैली में समझाया गया है। गाँवों में आज भी बेटे को बेटी से श्रेष्ठ समझा जाता है इसीलिए बेटे को दूध पीने के लिए दिया जाता है बेटी को नहीं यह दृश्य वास्तविकता को चरितार्थ करता है। बचपन वाले सुपर विलेन की परिकल्पना और माँ का ब्रह्मास्त्र वाला आइडिया गुदगुदाता है। पुस्तक में मिशन शिक्षण संवाद नाम के शिक्षकों के स्वतः स्फूर्त समूह के बारे में बताया गया है जिससे जुड़े हजारों शिक्षक बेसिक शिक्षा के उत्थान के लिए विभिन्न प्रकार के अभिनव प्रयास कर रहे हैं जिनमें दैनिक श्यामपट्ट संदेश, काव्यांजलि, स्वरांजलि, TLM निर्माण, दैनिक योग आदि के बारे में जानकर अच्छा लगा। स्वरांजलि वाला टॉपिक बहुत रोचक है इससे पता चलता है की किताबों की कविताओं/पाठों को भी फिल्मी गीतों की धुन पर ढालकर किस तरह बच्चे आनन्द और उमंग के साथ बड़ी सरलता से सीख लेते हैं।

रोहन का यू ट्यूब वाला भाषण बहुत ही प्रभावशाली और भावपूर्ण बन पड़ा है। इसे सुनकर शहरी बच्चों की गाँवों के बारे में जो नकारात्मक सोच बनी हुई थी वो एकाएक सकारात्मक रूप में बदल जाती है और वो उन ग्रामीण बच्चों की मदद के लिए अपनी स्टेशनरी और किताबें यहाँ तक कि पुराने मोबाइल फोन भी भेज देते हैं।

अन्त में लेखक का अपनी पुत्री के नाम लिखा गया पत्र आपको भावुक कर देता है।

कुल मिलाकर इस पुस्तक में नकारात्मक चीजें ढूँढने से भी नहीं मिलेंगी।

जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
विकास क्षेत्र व जनपद- बागपत

बाल कहानी

मोबाइल- हितकर और विनाशकारी

शिक्षण संवाद

दो बच्चे थे, राहुल और सोहन दोनों में गहरी मित्रता थी। सोहन पढ़ाई में बहुत अच्छा था किन्तु राहुल का पढ़ने में अधिक मन नहीं लगता था। वह स्कूल से घर वापस आते ही अपनी मम्मी के मोबाइल पर गेम खेलने लगता और पढ़ाई में भी ज्यादातर मोबाइल का ही उपयोग करता था। एक दिन विद्यालय मे वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन होना था जिसकी सूचना दो दिन पूर्व ही विधार्थियों को दी गयी थी। प्रतियोगिता का विषय था- "बच्चों के लिए मोबाइल का उपयोग- हितकर और हानिकारक"। राहुल और सोहन दोनों भी इस विषय पर पक्ष में बोलने की तैयारी करने लगे। सोहन ने सोचा क्यों न इस विषय पर घर पर भी चर्चा की जाये। उसने अपने पिता से बात की जिसमें सोहन ने मोबाइल को जीवन का सबसे जरूरी अंग बताया।

सोहन- "पापा, मोबाइल के बिना तो आज के समय मे कोई काम हो ही नही सकता। दूर बैठे लोगों से आसानी से बात हो जाती है । इसका उपयोग पढ़ाई में भी होता है, जिज्ञासा का उत्तर मोबाइल से तुरन्त मिलता है।"

पिता जी- "बेटा मोबाइल इतना भी उपयोगी नहीं है जितना तुम समझ रहे हो। इसके ज्यादा उपयोग से बच्चों का शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास रुक जाता है। आज बच्चे पार्क में खेलने की जगह मोबाइल पर खेलना ज्यादा पसन्द करते हैं। गणित के प्रश्न बच्चे शीघ्रता से मोबाइल के कैलकुलेटर से हल कर लेते हैं जिससे उनकी गणित पर पकड़ कमजोर हो रही है और तो और बच्चे एकान्त में रहना अधिक पसन्द कर रहे हैं जिससे सामाजिक विकास भी बाधित हो रहा है। मोबाइल शिक्षा मे शिक्षकों का स्थान कदापि नही ले सकता। न तो वह गलती पर डाँट सकता है और न ही अच्छाई पर शाबासी दे सकता है।"

सोहन को अब बात समझ में आ गयी। अगले दिन वाद-विवाद प्रतियोगिता में काफी बच्चों ने भाग लिया जिसमें राहुल ने पक्ष और सोहन ने विपक्ष में बोला। सभी सोहन के विचारों से प्रभावित हुए व उसे पुरस्कृत कर सम्मानित भी किया गया।

शिक्षा- मोबाइल का अत्यधिक उपयोग बच्चों के शारीरिक, मानसिक व सामाजिक विकास को बाधित करता है। अतः इसका कम से कम प्रयोग बच्चों को करना चाहिए।

आरती वर्मा,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय रेवा,
विकास खण्ड-बिसवां, जनपद-सीतापुर।

खेल

साइकिल रेस

शिक्षण संवाद

भारत में साइकिल आम आदमी के वाहन के रूप में प्रतिष्ठित है। गरीब अपने रोजमर्रा के कार्यों के लिए एवं अमीर अपने शारीरिक स्वास्थ्य लाभ के लिए साइकिल का उपयोग करता है। इन सबके अलावा साइकिल अब खेलों में प्रयोग होने लगी हैं। खेलों में साइकिल की रेस अर्थात दौड़ के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है।

जहाँ तक साइकिल दौड़ की बात है, सबसे पहली साइकिल दौड़ का आयोजन 31 मई 1868 में फ्रांस की राजधानी पेरिस में हुई थी। इस दौड़ में शामिल एवं जीतने वाली साइकिल ठोस रबर के टायरों एवं लकड़ी की बनी हुई थी। जो आज भी इंग्लैण्ड के ईली कैम्ब्रिजशायर के संग्रहालय में रखी हुई है।

प्रारम्भ में यह खेल पश्चिमी यूरोपीय देशों- फ्रांस, स्पेन, बेल्जियम और इटली में लोकप्रिय था। धीरे-धीरे द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद- कोलम्बिया, डेनमार्क, लक्जमबर्ग, जर्मनी, नीदरलैंड्स, पुर्तगाल एवं स्विट्ज़रलैंड में लोकप्रिय हुआ।

रोड़ साइकिल रेस में टीम और व्यक्तिगत दोनों स्पर्धाएँ शामिल हैं। यह दौड़ प्रायः बसन्त ऋतु में आयोजित की जाती है। यह दौड़ एक दिवसीय तक होती हैं। कभी कभी दौड़ें एक विशिष्ट दूरी के बजाय एक निर्धारित समय जैसे- 60 मिनट, 90 मिनट आदि के लिए भी होती हैं।

आधुनिक समय मे साइकिल दौड़ में कई तरह की दौड़ शामिल हैं। जैसे- सड़क साइकिल, ट्रैक साइकिलिंग, साइक्लो पार, पहाड़ पर चढ़ने वाली मोटर साइकिल, वी एम एक्स, साइकिल स्पीडवे, मोटर से चलने वाली रेसिंग, बजरी रेसिंग, औसत गति आदि।

भारत में भी साइकिल दौड़ मैराथन के रूप में चली आ रही है। यह दौड़ एकल व सामूहिक रूप में शामिल है। सन 2020 मे लेफ्टिनेंट कर्नल भरत ने इंडोर साइकिलिंग रेस में 4000 पैडल चलाकर रेड एक्रोस अमेरिका (आरएसएम) का खिताब अपने नाम दर्ज किया। कोरोना वायरस के चलते आयोजकों ने इसे वर्चुअल कराने का फैसला किया। जिसमें पूरी दुनिया के साइकिल सवारों ने इंडोर ट्रेनर में प्रतिस्पर्धा कराई गई थी। जिसमें इन्होंने यह खिताब अपने नाम कर भारत का नाम रोशन किया था।

साइकिल रेस में खेल के साथ ही साथ बहुत से लाभ हैं। इसमें न तो ईंधन की आवश्यकता होती है और न ही किसी प्रकार के लाइसेंस की ही जरूरत होती है। इसके अलावा पर्यवारण को साफ-सुथरा रखने में भी यह कारगर है। इससे गिर जाने पर अधिक चोट की सम्भावना भी नहीं रहती है। साइकिल का प्रयोग गरीब के अलावा अमीर देशों में भी पर्यावरण संतुलन बनाये रखने के लिए अधिकतर लोग अपने रोजमर्रा के कार्य में प्रयोग करते हैं। इसे चलाने से स्वस्थ्य भी बरकरार रहता है तथा इसे बच्चे व बूढ़े सभी चलाना पसन्द करते हैं। बहुउद्देश्यीय होने के साथ ही साथ खेलों में साइकिल रेस के रूप में आज यह एक प्रतिष्ठित खेल है।

रूमी गम्भीर,
सहायक शिक्षिका,
कम्पोजिट विद्यालय इटैली,
विकास खण्ड- हथगाम, जनपद- फतेहपुर।

"भारत एक प्राचीन देश, लेकिन एक युवा राष्ट्र है।...मैं जवान हूँ और मेरा भी एक सपना है। मेरा सपना है भारत को मजबूत, स्वतन्त्र, आत्मनिर्भर और दुनिया के सभी देशों में से प्रथम रैंक में लाना और मानव जाति की सेवा करना।"

- राजीव गांधी
पूर्व प्रधानमन्त्री

योग विशेष

क्रिया-योग

शिक्षण संवाद

संसार क्रियाशीलता का परिचायक है या यूँ कहा जाये कि यह संसार क्रियाशीलता का एक उदाहरण है। यहाँ पर कुछ भी स्थिर नहीं है। सब कुछ चलायमान है और निरन्तर चलता भी रहता है। सब कुछ सक्रिय व गतिशील है। इस चराचर संसार में मौन जैसा कुछ है ही नहीं। यहाँ तक कि नींद में भी गति है। हमें ऐसा प्रतीत होता है कि हम सो रहे हैं परन्तु शरीर के अन्दर अनेकों-अनेक गतिविधियाँ होती रहती हैं और मन में भाँति-भाँति के विचारों का उद्गार होता रहता है। हमारा शरीर जागरण अवस्था से अधिक सुषुप्त अवस्था में वृद्धि करता है। इसीलिए शिशु और नवयुवक बूढ़े व्यक्ति की अपेक्षा अधिक सोते हैं।

भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि, "क्या तुम जानते हो कि कौन सा मनुष्य सबसे अधिक बुद्धिमान और विवेकशील है? वह व्यक्ति जो क्रियाशीलता में मौन व मौन में क्रियाशीलता को प्राप्त कर लेता है, वही सर्वश्रेष्ठ मनुष्य होता है। ऐसी स्थिति की प्राप्ति के लिए सजगता, जागरूकता एवं उत्सुकता की पराकाष्ठा की जरूरत होती है। व्यक्ति में कार्य करने की निपुणता, उसमें कार्य करने के प्रति उत्साह को जन्म देती है और यही कार्य करने की योग्यता ही क्रिया योग है।"

क्रिया योग के तीन भाग होते हैं-

1.तप

2.स्वाध्याय

3.ईश्वरप्रणिधान

तप से आशय स्वीकार करने की क्षमता से होता है। हम अपने घर में रहते हुए अपनी इच्छा से इधर-उधर कहीं भी उठ-बैठ व घूम टहल सकते हैं किन्तु यदि हम वायुयान में बैठ जायें तो काफी देर तक बैठने से हमारे पैरों में स्थिरता सी आ जाती है। पैरों में जड़ता के कारण भारीपन महसूस होने लगता है और हम चाहकर भी इधर-उधर नहीं हो सकते हैं। थकावट व भारीपन होने के बावजूद हम उसी स्थान पर बैठे रहते हैं और तो और हम बिना किसी से शिकायत किए यान में एक ही स्थान पर बैठे रहते हैं और यही तप कहा जाता है अर्थात स्वेच्छा पूर्वक विपरीत परिस्थिति को स्वीकार करना ही तप कहलाता है। इसे इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि यदि हम किसी निमन्त्रण में घर से दूर जाते हैं और वापसी में काफ़ी लेट हो जाते हैं। रास्ते में ड्राइविंग करते समय हमें नींद आने लगती है किन्तु हम सोते नहीं हैं। हम यह सोचकर कि अब तो घर पहुँचकर सोना ही है, ड्राइविंग करते रहते हैं। इसमें तकलीफ़ तो होती है फिर भी हम बिना किसी से शिकायत किये हुए निरन्तर उस कार्य को करते रहते हैं, यही तप है।

इसी तरह जिम में जाकर साइकिल चलाना और भारोत्तोलन करने में कोई आनन्द नहीं मिलता है। फिर भी हम इसे करते हैं और इसके लिए हम पैसे का भी त्याग करते हैं। दरअसल हम इस सोच के साथ इसे करने को तैयार होते हैं कि यह कार्य हमारे शरीर के लिए लाभदायक होता है अर्थात जिस कार्य से हमें लाभ होने की आशा होती है हम उसे करने को तैयार रहते हैं और उसके लिए सहने को भी तैयार रहते हैं। यही सहनशीलता ही तप कहलाती है।

स्वाध्याय से आशय स्वयं के अध्ययन अथवा अपने प्रति जागरूक होने से होता है। हमारे अन्दर कैसी भावनाएँ जागृत हो रही हैं। किस प्रकार के विचार उत्पन्न हो रहे हैं और मन में कैसी घटनाएँ घट रही हैं? इन सबका अवलोकन व अध्ययन ही स्वाध्याय होता है। ईश्वरप्रणिधान से आशय भगवान के प्रति प्रेम से होता है। तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान ये तीनों मिलकर क्रिया योग कहलाते हैं।

योगः कर्मसु कौशलम्

बबलू सोनी,
सहायक शिक्षक,
प्राथमिक विद्यालय उतरार,
विकास खण्ड-बाबागंज,
जनपद-प्रतापगढ़।

सदविचार

मदर टेरेसा

शिक्षण संवाद

भारत देश एक से बढ़कर एक महान नारियों की गाथा गाते नहीं थकता। उनमें से एक हैं मदर टेरेसा। सच्चे अर्थों में मानवता की पुजारी मदर टेरेसा को कोटि-कोटि नमन। गरीब, अनाथ, असहाय और रोगियों की सेवा करने में अपना सम्पूर्ण जीवन गुजार देने वाली मदर टेरेसा समाज के लिए एक उदाहरण बन गयीं। इस महान विभूति का जन्म 26 अगस्त 1910 को मेसिडोनिया के स्कॉप्जे में यूगोस्लाविया में हुआ था। मदर टेरेसा का वास्तविक नाम अग्नेस गोंझा बोयाजिजु था। अल्बेनियन भाषा में गोंझा का अर्थ फूल की कली होता है।

मदर टेरेसा के पिताजी का निधन उनके बचपन में ही हो गया था। जिनका पालन-पोषण इनकी माता जी के द्वारा किया गया। यह आगे चलकर सिस्टर टेरेसा और फिर मदर टेरेसा, सन्त मदर टेरेसा आदि नामों से जानी गयीं। मदर टेरेसा 1929 में भारत आयीं और वह इतना प्रभावित हुईं कि 1946 में कोलकाता गयीं। मदर टेरेसा को रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा 'सन्त टेरेसा' के नाम से नवाजा गया। मदर टेरेसा रोमन कैथोलिक नन थीं। मदर टेरेसा ने स्वेच्छा से 1948 में भारतीय नागरिकता ले ली थी। परोपकार एवं रोगियों, असहायों की सेवा करने वाली मदर टेरेसा को हम सभी याद करते हैं। उनका जीवन प्रेरणादायक है। जिन्हें मरने के बाद भी उनके के कार्यों के द्वारा आज भी अपने दिलों में जीवित रखे हैं।

मदर टेरेसा ने अपने जीवन को दूसरों की सेवा करने के लिए न्योछावर कर दिया। दया, प्रेम, करुणा आदि के भाव लिए नि:स्वार्थ भाव से सदैव गरीब लाचार सभी लोगों की सेवा की। मदर टेरेसा ने अपनी वाणी से हम सबके लिए कुछ प्रेरणादायक अनमोल विचार प्रदान किये हैं। जो प्रेरणा देने वाले हैं- "शान्ति एक मुस्कुराहट है जो सदैव एक मन को शान्ति प्रदान करती है। शान्ति स्थापित करने के लिए हमें बन्दूकों की जरुरत नहीं होती बल्कि प्यार और दया की जरूरत होती है।"

"ऐसा काम करें जिससे स्वयं को सन्तुष्टि मिले और दूसरे भी खुश रहें।"

"दया के शब्द बोलने में छोटे और आसान हो सकते हैं लेकिन उनके गूँज अन्तहीन होती है।"

"हम सब महान कार्य नहीं कर सकते किन्तु सब छोटे-छोटे कार्य बहुत प्यार से कर सकते हैं।"

कार्य- मदर टेरेसा द्वारा मिशनरी आफ चैरिटी की स्थापना की गयी। मदर टेरेसा को गरीबों, रोगियों और लाचार लोगों की सेवा करने हेतु 1937 में "मदर टेरेसा" की उपाधि से सम्मानित किया गया। मदर टेरेसा जो मानव सेवा की एक महान प्रतिमूर्ति हैं। जिन्होंने 1948 में स्वयं को एक निश्चित वेशभूषा के लिए चुन लिया और जीवन भर उसी को अपनाया। मदर टेरेसा ने अनाथ बच्चों के लिए आश्रम भी बनवाया। मिशनरी आफ चैरिटी का उद्देश्य उन लोगों की मदद करना था जिनका दुनिया में कोई नहीं है। प्लेग और कुष्ठ रोगियों की स्वयं सेवा करती थी। मरीजों के घाव पर पट्टी मरहम स्वयं करती थी। मदर टेरेसा की लगातार कई वर्षों से स्वास्थ्य बिगड़ रहा था, दो बार दिल का दौरा पड़ने के बाद 5 सितम्बर 1997 को मदर टेरेसा का कोलकाता में देहान्त हो गया। मदर टेरेसा को आज भी हम सभी बड़ी ही श्रद्धा और सम्मान के साथ याद करते हैं।

सम्मान- भारत सरकार द्वारा 1962 में पद्म श्री सम्मान, 1980 में भारत रत्न सम्मान, 1985 में अमेरिका सरकार द्वारा मेडल आफ फ्रीडम अवार्ड प्रदान किया गया। 1979 में मदर टेरेसा को गरीब, बीमार एवं अनाथों की सेवा करने के लिए नोबेल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। मदर टेरेसा आज भी हम सभी लोगों को दया, ममता और त्याग के भाव के साथ सभी को एक दूसरे से प्रेम करने एवं सहायता करने की शिक्षा प्रदान करती हैं।

त्याग, दया की मूरत हो,
ममता के साक्षात सूरत हो।
नहीं कभी थकी हो तुम,
मानवता की सच्ची मिसाल हो तुम।।

सारे सुख त्यागे तुमने,
पर दुःख को अपनाया तुम।
नींद छोड़कर जागीं तुम,
असहायों के लिए बनी मसीहा तुम।।

प्रतिमा उमराव,
सहायक अध्यापिका,
उच्च प्राथमिक विद्यालय अमौली (1-8),
विकास खण्ड- अमौली,
जनपद- फतेहपुर।

गतिविधि

कंचों से आकृतियाँ बनाना

शिक्षण संवाद

कक्षा- 6, 7

उद्देश्य- बच्चों को रोचक ढंग से कंचों से आकृति बनाना सिखाना

सामग्री- कंचे

गतिविधि- कविता के माध्यम से कक्षा-कक्ष के बोर्ड पर पहले विभिन्न आकृतियों को छात्रों को समझाएँगे। छात्रों के समूह बनाकर एक समूह को कंचे देकर गोले में बैठाएँगे। समझाये गये अनुसार एक समूह के बच्चों से ज्यामितीय आकृतियों में से अलग-अलग आकृति प्रत्येक बच्चे से बनवाएँगे। बच्चों द्वारा जब कंचों से कक्षा-कक्ष के फर्श पर ज्यामितीय आकृतियाँ बनायी जाएँ तो छात्रों का दूसरा समूह भी उसको देखकर उनकी आकृतियों के नाम बारी-बारी से बताएँगे साथ ही उस आकृति की कोई दो पहचान भी बताएँगे।

कविता के माध्यम से एक-एक आकृति को पढ़कर बच्चों से बुलवाकर उन्हें बोर्ड पर लिखी कविता पढ़ने को कहेंगे और परिभाषाएँ भी याद करवाएँगे।

जो बच्चा आकृतियों की पहचान नहीं कर पाएगा उसे बोर्ड से देखकर उस आकृति को समझने में मदद करेंगे। इस तरह रोचक गतिविधि द्वारा छात्रों का अभ्यास जारी रखेंगे।

त्रिभुज~~

त्रिभुज की होती तीन भुजाएँ,
तीन शीर्ष भी होते हैं।
तीन कोण की बन्द आकृति को,
हम 'त्रिभुज' कहते हैं।।

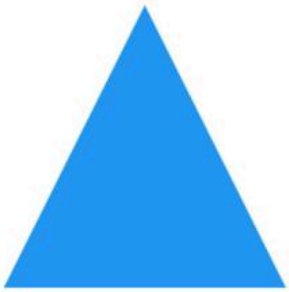

उदाहरण- तीर के आगे का नुकीला तिकोना भाग

वर्ग~~

वर्ग की होती चार भुजाएँ,
लम्बाई और चौड़ाई समान होती।
लम्बाई गुणा चौड़ाई 'क्षेत्रफल' होता,
चारों भुजाओं की नाप 'परिमाप' होती।।

उदाहरण- फर्श की चौकोर टाइल

आयत~~

आयत की आमने-सामने की,

दोनों भुजाएँ बराबर होतीं।

चारों कोण 90° अंश के होते,

चारों भुजाओं की नाप 'परिमाप' होती।।

उदाहरण- किवाड़

बेलन~~~

गोल, दो सतह वाली आकृति,

दो-वृत्त, एक-आयत से बनता।

दोनों वृत्त बेलन का आधार कहलाते,

त्रि-आयामी, ठोस, बेलनाकार होता।।

उदाहरण- गोलाकार खम्भे

शंकू~~

शंकू, गोल, नुकीला दिखता,

जोकर की टोपी के जैसा होता।

त्रि-विमीय आकृति यह होती,

त्रिभुज के समान दीखता।।

उदाहरण- आइसक्रीम की कोन

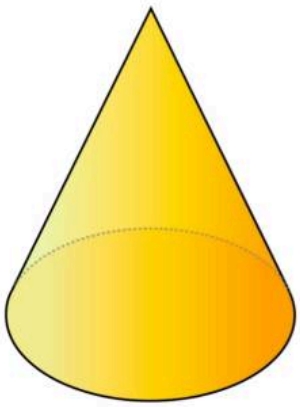

लाभ-

1- छात्रों को आकृतियों का प्रभावी ज्ञान होगा।

2- छात्र आकृतियों की भिन्नता को समझेंगे।

3- नये शब्दों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

नैमिष शर्मा,

सहायक अध्यापिका,

उच्च प्राथमिक विद्यालय तेहरा(1-8),

विकास क्षेत्र व जनपद- मथुरा।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर–9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. ट्विटर एकाउण्टः https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू–टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. टेलीग्रामः https://t.me/missionshikshansamvad
9. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
मिशन शिक्षण संवाद